एक अनोखी चिकित्सा पद्धति

ऐसा तो नहीं है कि आप कभी बीमार नहीं पड़े होंगे । (अरे भाई बदुआयें नहीं दे रहा हूँ ।) छीकें होंगे । कभी बुखार चढ़ा होगा । मलेरिया, टाइफाईड, कालरा, टी.वी., शुगर । अरे डरिये नहीं बड़ी आम बिमारी हैं । मेरे कहने का मतलब था कि दवा कौन सी लेते हैं । एलोपैथिक या होम्यापैथिक । इन पैथियों का अर्थशास्त्र भी भिन्न भिन्न होता है । भिन्न भिन्न तरीका होता है । अब अगर आपको कोई बिमारी हो गई है (माफ करें । कभी न हो । सिर्फ उदाहरण के लिये ।) और आपकी बिमारी का खर्च आपका विभाग उठा रहा हो तो एलोपैथी चलेगी । इसका स्टैंडर्ड थोड़ा ऊंचा होता है । मेडिकल इक्ज़ाम में भी चे ऊंची चीज होती है । या आप नगदऊ को स्वास्थ्य से कम चाहते हैं तो फिर एलोपैथी की शरण में जायेंगे । इसके बारे में एक नकारात्मक तथ्य यह है कि ये बिमारी के साथ शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को भी नष्ट कर देती है । इसलिये बुद्धिमान व्यक्ति सलाह देते हैं कि इमरजेंसी में ही इसको सेवा का अवसर दिया जाये ।

मीठी गोलियाँ । होम्योपैथी । इसका अर्थशास्त्र थोड़ा आम आदमी के लेवल का होता है । बस डाक्टर साहब फीस ऊँची न लें । दवा दारू वाली उक्ति को इन्होंने ज्यादा तत्परता से ग्रहण किया है । इसलिये इनकी अधिक्तर दवाएं एलकोहल होती हैं । दो बूंद दारू दवा है । दो पैग मस्ती है । उससे ज्यादा पीने पर पीने वाला रोता है और दुनिया हँसती है । इसके बारे में एक खास बात यह है कि यह मर्ज को दबाती नहीं है बल्कि उसका समुचित उपचार करती है ।

एक है अपनी खास चिकित्सा पद्धति, आयुर्वेद । देशी चीज । ये सस्ती भी होती है और मंहगी भी । अगर आपको गैसट्रिक ट्रबुल है तो त्रिफला फांक लीजिये । या हींग, अजवाइन । और भी बहुत से देशी मसाले हैं ।

और अगर आप शाही इलाज चाहते हैं तो फिर ये दस तोला सोना भी जला कर खिलवा सकते हैं । पर ये गैस के लिये नहीं हैं । इसकी खासियत यह है कि इसके लिये घर में ही काफी कुछ उपलब्ध होता है और अगर ज्यादा प्रभाव चाहिये तो किसी वैद्य जी के निकट जाइये । ये ऐसी ऐसी जड़ी बूटियों का नाम गिना देंगे कि खोजे नहीं पाइयेगा । मिलती है पर शहर की किसी खास दुकान पर जिसकी आपको जानकारी नहीं होगी । सी.आई.डी. वाले खोजने में मदद कर सकते हैं यदि उनको भी कोई बिमारी आयुर्वेद से ही दुरूस्त करनी हो । या उनका कोई मुजरिम अपना हाजमा ठीक करने के लिये उस दुकान पर आया हो ।

अब एक ऐसी चिक्तिसा पद्धति की बात करने जा रहा हूँ जो की फ्री फंड की है । एक्यूपंचर और एक्यूप्रेशर पद्धति । इस पद्धति में कोई दवा सवा खाने की जरूरत नहीं है बस शरीर का या हाथ का ही कोई हिस्सा दबा कर बैठ जाओ । ज्यादा तेज आराम चाहिये तो सुईयाँ खरीद लो और अपने को पंचर करवा लो । इसके अनुसार हमारे शरीर के जितने भी मुख्य अंग हैं उन सबका कनेक्शन कुछ नसों के द्वारा होता है जो कि पूरे शरीर में फैली होती हैं । हर तरह की बिमारी, जुकाम से लेकर कैंसर तक आप इससे ठीक कर सकते हैं । (बताने वाले तो यही बताया ।)

आपने कभी ऐसे साधुओं को देखा होगा जो कि सुई के बिस्तर पर या कांटो की झाड़ पर लेटे होते हैं । मुझको लगता है कि एक्यूप्रेशर या एक्यूपंचर की शुरूआत ऐसे ही हुयी होगी । चीन वाले तो झूठ बोलने में माहिर ही हैं । कह दिया हमने खोजा है । झूठे, धोखेबाज कहीं के (चीन के) । हाँ तो मैं कह रहा था कि कांटों के बिस्तर पर कोई बिमार साधु बेहोश हो कर गिर गया होगा । कुछ देर में उसकी सारी नसें तड़ाक फड़ाक ठीक हो गई होगी । बुद्धि हरी हो गई होगी । सटाक से उसने चिलम निकाली होगी । गांजा भरा होगा । एक सुट्टा खींचा होगा और जोर से चिल्लाया होगा 'यूरेका' 'यूरेका' मतलब फ्री फंड का इलाज ।

आधुनिक एक्यूप्रेशर में भी यही होता है । अब आप बबूल के दस फिट के झाड़ को घर में तो रख नहीं सकते हैं इसलिये प्लास्टिक की कांटेदार प्लेट चलन में हैं । उस पर खड़े हो जाइये और स्वस्थ अनुभव कीजिये । टोटल यौगिक आनंद ।

अब चलिये एक्यूपंचर की तरफ । साइकिल में पंचर हो तो हवा निकलती है । शरीर में पंचर हो तो खून निकलता है । ज्यादा बढ़िया फायदा चाहिये हो तो दस ठो सुई खरीद लो और किसी विशेषज्ञ से ठुंसवालो । दर्द नहीं होता है । बस चींटी सी काटती है । कभी कभी खून निकल आता है पर इससे ज्यादा रक्तदान तो आप हर रात मच्छरों को कर देते हैं । खबराने की कोई जरूरत नहीं है सब ठीक हो जायेगा । इससे भी तेज फायदा चाहिये तो विशेषज्ञों में विशेषज्ञ, सयाने (कसाई) विशेषज्ञ बिजली का भी इंतजाम किये रहते हैं । एक से बारह वोल्ट का करंट सुईयों में प्रवाहित करा देंगे । कुछ नहीं होगा बस हल्का सा चुनचुनायेगा । ज्यादा तेज होगा तो आप खुद ही "सी" की ध्वनि करते हुये हाथ हटा लेंगे । पर घबराइये नहीं फिर से कोशिश कीजिये ।

ये पद्धति हमारे आम जीवन में भी बहुत कारगर है । अब जैसे सासू माँ का सिर दर्द कर रहा है तो बहू गले पर एक्यूप्रेशर का प्रयोग कर सकती है । यदि आपके सिर में दर्द किसी 'ण' नाम के आदमी ने उत्पन्न किया हो तो आप एक्यूपंचर विधी अपनायें । इसमें आप सुई की जगह चाकू या कोई भी लंबा नुकिला डंडा ले लीजिये और 'ण' के शरीर में कहीं भी जैसे सिर, छाती, पेट में घुसा दीजिये । 'ण' खत्म, दर्द खत्म ।

एक्यूप्रेशर और एक्यूपंचर में आधे मरीजों का दर्द सुई, करंट और विशेषज्ञों की निमर्म तत्परता देख कर ही भाग जाता है । बाकी आधा मर्ज भी चला ही जाता है क्योंकि जो भी हो चिक्तिसा पद्धित तो है ही ।